1. यह जानना कि प्रभु को क्या प्रिय है

प्रेरित पौलुस इफिसियों 5:8–10 में लिखते हैं (HCL):

“क्योंकि पहले तुम अंधकार थे, पर अब तुम प्रभु में प्रकाश
हो। प्रकाश के बच्चों की तरह चलो। (प्रकाश का फल सभी भले, धर्मी और सत्य में मिलता है) और यह जानने का प्रयास करो कि क्या प्रभु को प्रिय है।”

पौलुस यह कह रहे हैं कि एक सच्चा विश्वासी सिर्फ यह दावा नहीं करता कि वह प्रकाश में चल रहा है — बल्कि वह इसे इस बात से प्रमाणित करता है कि वह लगातार यह परखता और पहचानता है कि क्या परमेश्वर को प्रिय है। इसका मतलब है कि हमारे परमेश्वर के साथ चलने का मार्ग निष्क्रिय नहीं है; यह जानबूझकर होना चाहिए। हर निर्णय, हर दृष्टिकोण, और हर कार्य का मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए: “क्या यह प्रभु को प्रिय है?”

“परखना” (ग्रीक: dokimazō) का शाब्दिक अर्थ है “जांचना, परखना या प्रमाणित करना।” इसलिए विश्वासी को हमेशा आध्यात्मिक संवेदनशीलता में रहना चाहिए — हर चीज़ की जाँच करें, जो अच्छा है उसे रखें (1 थिस्सलुनीकियों 5:21) और जो परमेश्वर को अप्रिय

लगे उसे त्याग दें।

आज हम उस चीज़ के बारे में सीखेंगे जो प्रभु को बहुत प्रिय है — तूफ़ान में भी अडिग विश्वास।

2. नाव में यीशु: तूफ़ान और शिक्षा

लूका 8:22–25 (HCL)

“एक दिन यह हुआ कि यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव में बैठ गए
और उन्होंने कहा, ‘चलो, हम झील के दूसरी ओर चलते हैं।’ और वे रवाना हुए।
लेकिन जब वे नाव में थे, यीशु सो गए। और झील पर तूफ़ान उठा,
और नाव पानी से भरने लगी और वे संकट में थे।
वे जागाकर यीशु के पास गए और बोले, ‘हे प्रभु, हम डूब रहे हैं!’ तब यीशु उठे और हवा और पानी की भीषण हलचल को शांत किया। और सब शांत हो गया।
फिर उन्होंने उनसे कहा, ‘तुम्हारा विश्वास कहाँ है?’ और वे डर गए और आश्चर्यचकित होकर एक-दूसरे से बोले, ‘यह कौन है? क्योंकि वह हवा और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानते हैं!’”

यह कथा ईश्वरीय रहस्य से भरपूर है। यीशु और उनके शिष्य गलील की झील के दूसरी ओर जा रहे थे — मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि सेवा के लिए। दूसरी ओर एक आदमी था जिस पर कई शैतान छा गए थे (लूका 8:26–39), जिसे मुक्ति मिलने के बाद अपनी समुदाय में सशक्त गवाह बनने का अवसर मिला।

तूफ़ान इसलिए आकस्मिक नहीं था। यह शैतानी हमला था, जो परमेश्वर के कार्य को रोकने के लिए था। बाइबल शैतान को “वायु के साम्राज्य का राजा” कहती है (इफिसियों 2:2), जिसका मतलब है कि वह कभी-कभी प्राकृतिक तत्वों — हवाओं, तूफ़ानों, और परिस्थितियों — के माध्यम से विश्वासियों के दिलों में भय और संशय पैदा करता है।

लेकिन जब शैतान हमला करता है, तो भी परमेश्वर इसे एक उच्च उद्देश्य के लिए अनुमति देते हैं: हमारे विश्वास की परीक्षा और उसे मजबूत करने के लिए।

3. जब मसीह सोते हुए प्रतीत होते हैं

ग्रंथ कहता है: “जब वे नाव में थे, यीशु सो गए।”

यह उदासीनता का संकेत नहीं है — यह विश्वास की परीक्षा है। भजन

संहिता 121:4 कहती है:

“देखो, जो इस्राएल को रखता है, वह न तो झपकी लेता है और न सोता है।”

इसलिए, जब ऐसा लगे कि यीशु हमारे जीवन में “सो रहे हैं,” वे पूरी तरह सचेत हैं। वे चुप हो सकते हैं, लेकिन अनुपस्थित नहीं हैं। उनकी चुप्पी यह दर्शाने के लिए है कि क्या हम उनके वचन पर भरोसा करते हैं या अपने हालात पर।

यीशु पहले ही कह चुके थे, “चलो दूसरी ओर चलते हैं।” उनका वचन आगमन की ईश्वरीय गारंटी था। तूफ़ान उनकी प्रतिज्ञा को रद्द नहीं कर सकता। इसी तरह, हमारे जीवन में भी यदि मसीह ने कोई वचन दिया है — चाहे शास्त्र के माध्यम से या पवित्र आत्मा की भीतर की पुष्टि से — हमें इसे तब भी थामे रहना चाहिए जब लहरें उठें।

रोमियों 10:17 (HCL) कहता है:

“इस प्रकार विश्वास सुनने से होता है, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है।”

शिष्यों ने वचन सुना, लेकिन परीक्षा के समय उन पर विश्वास नहीं किया।

4. विश्वास जो परमेश्वर को प्रिय है

जब शिष्य चिल्लाए, “हे प्रभु, हम डूब रहे हैं!”, यीशु ने तूफ़ान को शांत किया — लेकिन फिर उन्होंने उनके अविश्वास की निंदा की: “तुम्हारा विश्वास कहाँ है?”

विश्वास परमेश्वर को प्रिय होने के सबसे शक्तिशाली तरीकों में से एक है। हिब्रू 11:6 (HCL) कहता है:

“और विश्वास के बिना परमेश्वर को खुश करना असंभव है,
क्योंकि जो कोई उसके पास आता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि
वह है और कि वह उन्हें पुरस्कार देगा जो उससे गंभीरता से
ढूंढते हैं।”

परमेश्वर को तब प्रसन्नता होती है जब हम उस पर भरोसा करते हैं — न केवल जब सागर शांत हो, बल्कि जब तूफ़ान क्रूर हो। विश्वास कहता है: “यदि मैं उसे कार्य करते न देखूँ, तब भी वह नियंत्रण में है।”

विश्वास शांति में प्रमाणित नहीं होता; यह दबाव में प्रमाणित होता है। कोई भी धूप में विश्वास कर सकता है, लेकिन परिपक्व विश्वास तब भी स्थिर रहता है जब गरज सुनाई देती है।

5. नाव का प्रतीक

नाव आपके जीवन का प्रतीक है — आपके विश्वास का मार्ग, आपकी सेवा, आपका परिवार, आपकी बुलाहट।
तूफ़ान का प्रतीक है — परीक्षाएँ, आध्यात्मिक युद्ध, अनिश्चितता और भय।
नाव में यीशु परमेश्वर की स्थायी उपस्थिति का प्रतीक है (यूहन्ना 14:17)।

जब तक मसीह आपके नाव में हैं, यह डूब नहीं सकती। आप पानी में हो सकते हैं, लेकिन डूबेंगे नहीं। यशायाह 43:2 (HCL) कहता है:

“जब तुम पानी से गुजरोगे, मैं तुम्हारे साथ हूँ; और नदियों
से, वे तुम्हें न डुबाएँगी।”

आप हिल सकते हैं, लेकिन आप कभी अकेले नहीं छोड़ेंगे।

6. घबराहट और शिकायत का खतरा

जब परीक्षा आती है, हमारी प्राकृतिक प्रतिक्रिया डर या शिकायत होती है। शिष्यों ने घबराकर कहा, “हम डूब रहे हैं!” इस्राएलियों ने भी यह जंगल में किया।

निर्गमन 16:2–3 (HCL) कहता है:

“सभी समुदाय मूसा और हारून के खिलाफ बड़बड़ाने लगे। इस्राएलियों ने कहा, ‘काश हम मिस्र में प्रभु के हाथ से मर जाते! वहाँ हम मांस के बर्तन में बैठे और जो खाना चाहते थे
खा सकते थे, पर अब तुम हमें इस रेगिस्तान में ले आए हो ताकि
यह पूरा समुदाय भूखा मर जाए।’”

उनका भय परमेश्वर की विश्वसनीयता को भूलने के कारण था। फिर भी परमेश्वर ने मन्ना और बटेर दिए — न कि क्योंकि उन्होंने उसे प्रसन्न किया, बल्कि क्योंकि वह दयालु हैं। लेकिन उनका अविश्वास उनकी नियति को विलंबित कर दिया।

इसी तरह, आज कई ईसाई कठिनाई आते ही निराशा में चिल्लाते हैं।

परमेश्वर अभी भी उत्तर दे सकते हैं, लेकिन वह हमेशा प्रसन्न नहीं होते। परिपक्व विश्वास परमेश्वर के हाथ को देखे बिना भी भरोसा करता है।

7. जब विश्वास विश्राम करता है, तूफ़ान शांत हो जाता है

नाव के डूबने का असली खतरा कभी नहीं था। यीशु की उपस्थिति सुरक्षा की गारंटी थी।
जब आप मसीह के साथ चलते हैं, कोई तूफ़ान उस चीज़ को नष्ट नहीं कर सकता जिसे परमेश्वर ने निश्चित किया है।

भजन संहिता 46:1–3 (HCL) कहती है:

“परमेश्वर हमारी शरण और बल है, संकट में तुरंत सहायता करता
है। इसलिए हम डरेंगे नहीं, भले ही पृथ्वी हिले, भले ही पर्वत समुद्र में गिरें, उसके पानी बुलबुले करें और वह पर्वत
कांपे।”

जो विश्वास परमेश्वर की सर्वोच्चता में विश्राम करता है, वह उसे गहरा प्रिय है।
जब हम भरोसा करते हैं कि “सभी चीजें भलाई के लिए काम करती हैं”

(रोमियों 8:28), तो हम तूफ़ान के बीच भी उसे प्रभु के रूप में सम्मान देते हैं।

8. यीशु को नाव में कैसे रखें

यीशु को नाव में रखने का मतलब है उन्हें अपने हृदय में बनाए रखना — आज्ञाकारिता, पवित्रता, और उनके वचन में संगति के माध्यम से।

यूहन्ना 14:23 (HCL) कहता है:

“यदि कोई मुझसे प्रेम करता है, तो वह मेरा वचन रखेगा; और मेरा पिता उसे प्रेम करेगा, और हम उसके पास जाकर उसके साथ निवास करेंगे।”

जब तूफ़ान आए, आज्ञाकारिता आपको स्थिर रखेगी। पवित्रता आपको सुरक्षित रखेगी। और विश्वास आपको बनाए रखेगा।

आपको घबराहट की प्रार्थनाओं से यीशु को “जागने” की आवश्यकता नहीं है; विश्वासपूर्ण भरोसा तूफ़ान को शांत कर देगा।

9. निष्कर्ष: विश्वास जो परमेश्वर को प्रिय है

जो विश्वास परमेश्वर को प्रिय है वह तूफ़ान को नकारता नहीं — वह केवल इससे प्रभावित होने से इंकार करता है।

भले ही यीशु चुप प्रतीत हों, आपका भरोसा दृढ़ रहना चाहिए:

वह नियंत्रण में हैं।
वह विश्वासयोग्य हैं।
वह असफल नहीं हो सकते।

आइए हम उस विश्वास से बढ़ें जो घबराता है, उस विश्वास तक जो विश्राम करता है — उस विश्वास से जो चिल्लाता है, “हम डूब रहे हैं!” उस विश्वास तक जो कहता है, “हम पार कर रहे हैं!”

रोमियों 15:13 (HCL) कहता है:

“आशा के परमेश्वर आपको सारी आनंद और शांति से भर दे, ताकि आप उस पर भरोसा करते हुए आशा में पूर्ण हो जाएँ।”

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp